shankar ji ki aarti

जय शिव ओंकारा हरि शिव ओंकारा

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्धांगी धारा।

(टेक) – एकानन चतुरानन पंचानन राजे।

हंसानन गरुड़ासन वृषवाहन साजे (जय०)

दो भुज चार चतुर्भुज भुज ते सोहे।

तीनों रूप निरखता त्रिभुवन जग मोहे (जय०)

अक्ष माला वनमाला रुण्डमाला धारी

चन्दन मृगमद सोहे भाले शशिधारी (जय०)

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे

सनकादिक ब्रह्मादिक भूतादिक संगे (जय०)

कर में श्रेष्ठ कमंडल चक्र त्रिशूल धर्ता

जगहर्ता जगकर्ता जग पालन कर्ता (जय०)

ब्रह्मा विष्णु सदा शिव जानत अविवेका

प्रणावाक्षर के मध्य यह तीनों एका (जय०)

त्रयगुण शिव की आरती जो कोई गावे

कहत शितानन्द स्वामी मनवांछित फल पावे (जय०)